

पीड़ित मानसिकता, बलि का बकरा, और अमानवीकरण: नरसंहार का रास्ता

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी की ऐतिहासिक प्रक्षेपवक्र और 17 मई, 2025 तक इज़राइल के कार्यों से एक गहरी और परेशान करने वाली समानता सामने आती है कि कैसे एक राष्ट्र की पीड़ित मानसिकता अल्पसंख्यक समूह को व्यवस्थित रूप से निशाना बनाने की ओर ले जा सकती है, जो अंततः नरसंहार में समाप्त होती है। दोनों मामले एक पैटर्न को दर्शाते हैं जिसमें राष्ट्रीय पीड़ित की कथा को बढ़ावा देना, सामाजिक चुनौतियों के लिए अल्पसंख्यक को दोष देना, उस समूह का अमानवीकरण करना, उनके खिलाफ हिंसा भड़काना, और नरसंहार के कृत्यों में परिणाम होना शामिल है। यह निबंध इज़राइल के फलस्तीनियों के खिलाफ कार्यों की जांच करता है—सार्वजनिक बयानबाजी, सैन्य अभियानों, मानवाधिकार रिपोर्टों, और शैक्षणिक विश्लेषणों के माध्यम से—इनकी तुलना 1920 और 1930 के दशक में जर्मनी के यहूदियों के साथ व्यवहार से करता है, जिसके परिणामस्वरूप होलोकॉस्ट हुआ।

I. पीड़ित मानसिकता: आक्रामकता की नींव

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी (1919-1939): प्रथम विश्व युद्ध के बाद, जर्मनी ने वर्साय संधि द्वारा प्रेरित एक गहरी पीड़ित भावना को पोषित किया, जिसमें कठोर मुआवजे और क्षेत्रीय नुकसान शामिल थे। इस कथा ने जर्मनी को अन्यायपूर्ण रूप से दबाए गए और आंतरिक ताकतों द्वारा धोखा दिए गए के रूप में चित्रित किया। प्रचार, शिक्षा, और सार्वजनिक प्रवचन के माध्यम से, जर्मनों को खुद को पीड़ित के रूप में देखने के लिए तैयार किया गया, जो राष्ट्रीय पीड़ा और अपनी पूर्व गौरव को पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता पर केंद्रित था। यह मानसिकता, आत्म-दया और अपनी चुनौतियों में राष्ट्र की भूमिका को स्वीकार करने से इनकार द्वारा चिह्नित, उन लोगों के खिलाफ आक्रामक नीतियों की नींव रखी, जिन्हें जर्मनी की समस्याओं के लिए जिम्मेदार माना गया।

इज़राइल (1948-2025): इज़राइल की राष्ट्रीय पहचान होलोकॉस्ट के आघात से गहराई से प्रभावित है, जिसमें 60 लाख यहूदियों की जान गई और यहूदी चेतना पर स्थायी प्रभाव पड़ा। “फिर कभी नहीं” का सिद्धांत इज़राइल को एक स्थायी पीड़ित के रूप में प्रस्तुत करता है, जो नाज़ी उत्पीड़न की याद दिलाने वाली ताकतों से लगातार खतरे में है। विकिपीडिया का पीड़ित मानसिकता पर लेख आत्म-दया, नैतिक अभिजात्य, और सहानुभूति की कमी जैसे लक्षणों को पहचानता है, जो इज़राइली समाज में गहराई से समाए हुए हैं। होलोकॉस्ट शिक्षा, राष्ट्रीय स्मरणोत्सव, और राजनीतिक बयानबाजी इस पीड़ित भावना को मजबूत करते हैं, जो अक्सर ऐतिहासिक आघात को फलस्तीनी प्रतिरोध जैसे समकालीन खतरों से जोड़ते हैं। यह मानसिकता इज़राइल के अंतरराष्ट्रीय आलोचना के जवाब में स्पष्ट है—उदाहरण के लिए, 2024 में दक्षिण अफ्रीका का ICJ मामला—जहां नरसंहार के आरोपों को इज़राइल के अस्तित्व के अधिकार पर यहूदी-विरोधी हमले के रूप में खारिज किया जाता है, जो आलोचना के प्रति अति-संवेदनशीलता और अपनी पीड़ा को मान्यता देने की आवश्यकता को दर्शाता है।

समानता: दोनों राष्ट्रों ने एक पीड़ित मानसिकता को पोषित किया जिसने हमलावर-पीड़ित गतिशीलता को उलट दिया। जर्मनी ने खुद को विश्वासघात और दमन का शिकार बताया, जबकि इज़राइल खुद को होलोकॉस्ट की स्मृति में निहित यहूदी-विरोधी आक्रामकता का शिकार मानता है। जैसा कि विकिपीडिया लेख में वर्णित है, यह मानसिकता जिम्मेदारी स्वीकार करने से इनकार को बढ़ावा देती है—जर्मनी अपनी प्रथम विश्व युद्ध में भूमिका के लिए, इज़राइल अपनी कब्जे में भूमिका के लिए—जो दोनों को बलि के बकरे बनाए गए अल्पसंख्यक के खिलाफ हिंसा को उचित ठहराने में सक्षम बनाता है।

II. बलि का बकरा: सामाजिक चुनौतियों के लिए अल्पसंख्यक को दोष देना

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी: 1920 और 1930 के दशक में, जर्मनी ने अपनी सामाजिक समस्याओं के लिए यहूदियों को बलि का बकरा बनाया, 1923 की अति-मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, और सांस्कृतिक पतन जैसे आर्थिक संकटों को उनके प्रभाव के लिए जिम्मेदार ठहराया। प्रचार ने यहूदियों को बेईमान अवसरवादियों के रूप में चित्रित किया, जो जर्मनों का शोषण

करते थे, उन्हें राष्ट्र की समस्याओं के लिए आंतरिक दुश्मन के रूप में प्रस्तुत किया। इस कथा को मीडिया, शिक्षा, और यहूदियों को सार्वजनिक भूमिकाओं से बाहर करने जैसे कानूनों जैसी सार्वजनिक नीतियों के माध्यम से मजबूत किया गया, जिसने यह धारणा स्थापित की कि वे जर्मनी की परेशानियों का मूल कारण थे।

इज़राइल: 1948 में अपनी स्थापना के बाद से, इज़राइल ने लगातार अपनी सुरक्षा और राजनीतिक चुनौतियों के लिए फलस्तीनियों को दोषी ठहराया है, अक्सर कब्जे के कारण होने वाले व्यवस्थित दमन को नजरअंदाज करते हुए। 2023 में वेस्ट बैंक में 36 फलस्तीनी बच्चों की हत्या पर लेख इसका उदाहरण देता है, क्योंकि इज़राइली सेनाओं ने बच्चों को पत्थर फेंकने जैसे छोटे-मोटे कृत्यों के लिए खतरा बताकर उनकी मौत को उचित ठहराया, यहाँ तक कि सबसे छोटे फलस्तीनियों को भी अशांति के लिए बलि का बकरा बनाया। 7 अक्टूबर, 2023 को हुआ हमला, जिसे शुरू में हमास के नेतृत्व में नरसंहार के रूप में रिपोर्ट किया गया, जिसमें 1,195 इज़राइलियों की मौत हुई, इसका उपयोग पूरी फलस्तीनी आबादी को बदनाम करने के लिए किया गया। हालांकि, बाद की जांच से पता चला कि इज़राइली सेना के “हैनिल डायरेक्टिव” का उपयोग—जो इज़राइली सैनिकों को पकड़े जाने से रोकने के लिए, यहाँ तक कि इज़राइली लोगों की जान की कीमत पर भी, अंधाधुंध बल प्रयोग करता है—ने इन हताहतों में योगदान दिया, जिसमें रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि हेलीकॉप्टर की गोलीबारी और टैंक की गोलाबारी ने हमास लड़ाकों के साथ-साथ इज़राइली बंधकों को भी मार डाला। इसके बावजूद, व्यापक कथा सभी फलस्तीनियों को बलि का बकरा बनाती है, जैसा कि दिसंबर 2024 के मानवाधिकार रिपोर्टों में परिलक्षित होता है, जो नागरिकों के खिलाफ व्यवस्थित हिंसा को दस्तावेज करते हैं। 2023 के यरुशलम ध्वज मार्च में “अरबों को मारो” जैसे नारे और सार्वजनिक बयानबाजी फलस्तीनियों को और अधिक बलि का बकरा बनाते हैं, यह संकेत देते हुए कि उनकी मात्र मौजूदगी ही एक समस्या है, एक भावना जो अति-दक्षिणपंथी नेताओं द्वारा प्रतिध्वनित होती है, जो फलस्तीनियों को इज़राइल के अस्तित्व के लिए बाधा के रूप में चित्रित करते हैं।

समानता: दोनों राष्ट्रों ने सामाजिक मुद्दों के लिए अल्पसंख्यक को बलि का बकरा बनाया। जर्मनी ने आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं के लिए यहूदियों को दोषी ठहराया, जबकि इज़राइल ने सुरक्षा खतरों के लिए फलस्तीनियों को दोषी ठहराया, अक्सर कब्जे की प्रतिरोध को भड़काने में भूमिका और 7 अक्टूबर को इज़राइली मौतों में हैनिल डायरेक्टिव के योगदान जैसे अपने स्वयं के कार्यों को नजरअंदाज करते हुए। विकिपीडिया लेख की “अवांछित स्थिति के कारण के रूप में दूसरों की पहचान” विशेषता दोनों मामलों में स्पष्ट है, जर्मनी अपनी असफलताओं को नकारता है और इज़राइल जिम्मेदारी से बचता है, बलि के बकरे बनाए गए समूह के खिलाफ आक्रामक कार्यों को उचित ठहराता है।

III. अमानवीकरण और हिंसा भड़काना

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी: अमानवीकरण द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी की नीतियों का एक आधार था, जिसमें प्रचार यहूदियों को “आर्य” नस्ल के लिए अमानवीय खतरे के रूप में चित्रित करता था। मीडिया और सार्वजनिक अभियानों ने यहूदियों की मानवता को छीन लिया, उन्हें सामाजिक खतरे के रूप में चित्रित किया। इस बयानबाजी ने हिंसा को भड़काया, जर्मन श्रेष्ठता को महिमामंडित करने वाले बड़े पैमाने पर रैलियों ने यहूदियों को बदनाम किया, शत्रुता को सामान्य बनाया। 1938 तक, यहूदी समुदायों के खिलाफ राज्य-स्वीकृत हिंसा भड़क उठी, जो यहूदी पीड़ा के प्रति जनसंख्या को असंवेदनशील बनाने वाली वर्षों की अमानवीकरण प्रचार का प्रत्यक्ष परिणाम थी।

इज़राइल: इज़राइल का फलस्तीनियों का अमानवीकरण बयानबाजी और कार्यों दोनों में स्पष्ट है। 2023 के यरुशलम ध्वज मार्च, जहां प्रतिभागियों ने “अरबों को मारो” का नारा लगाया, हिंसा को सार्वजनिक रूप से भड़काने को दर्शाता है, फलस्तीनियों को एक सामूहिक दुश्मन के रूप में चित्रित करता है जो मृत्यु के योग्य है, जो जर्मन रैलियों के शत्रुतापूर्ण नारों के समान है। 2023 में वेस्ट बैंक में फलस्तीनी बच्चों की हत्या पर लेख इस अमानवीकरण को और दर्शाता है, क्योंकि बच्चों को खतरे के रूप में माना गया जिन्हें निष्प्रभावी करना था, इज़राइली सेनाओं ने उनकी मानवता के लिए बहुत कम सम्मान दिखाया, अक्सर छोटे-मोटे कृत्यों के खिलाफ घातक बल को उचित ठहराया। गाजा में, दिसंबर 2024 का मानवाधिकार रिपोर्ट व्यवस्थित हिंसा को उजागर करता है, जिसमें अस्पतालों जैसे नागरिक बुनियादी ढांचे पर हमले और भुखमरी की स्थिति लागू करना शामिल है, फलस्तीनियों को सैन्य अभियान में केवल लक्ष्य तक सीमित कर देता है, उनकी मूल मानवता पर कोई विचार नहीं करता।

समानता: दोनों राष्ट्रों ने अल्पसंख्यक का अमानवीकरण करके हिंसा को भड़काया। जर्मनी ने यहूदियों को अमानवीय के रूप में चित्रित करने के लिए स्पष्ट प्रचार का उपयोग किया, जबकि इज़राइल का अमानवीकरण व्यावहारिक है, फलस्तीनियों को खतरे के रूप में मानता है जिन्हें समाप्त करना है, जैसा कि साक्ष्य में देखा गया है। विकिपीडिया लेख की “सहानुभूति की

कमी" विशेषता दोनों मामलों में स्पष्ट है—जर्मनी ने यहूदी पीड़ा को नजरअंदाज किया, और इज़राइल फलस्तीनी जीवन की उपेक्षा करता है, अमानवीकृत समूह के खिलाफ हिंसा को सामान्य बनाता है।

IV. नरसंहार में परिणति

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी से द्वितीय विश्व युद्ध तक (1939-1945): जर्मनी की प्रक्षेपवक्र 1941 में शुरू हुए होलोकॉस्ट में परिणति हुई, जिसके परिणामस्वरूप 60 लाख यहूदियों का नरसंहार हुआ। यह वर्षों के प्रचार, बलि का बकरा बनाने, और अमानवीकरण का परिणाम था, जिसमें राज्य ने यहूदी आबादी को खत्म करने के लिए मृत्यु शिविर, सामूहिक गोलीबारी, और यहूदी बस्तियों में भुखमरी जैसे व्यवस्थित तरीकों का उपयोग किया। समूह को नष्ट करने का इरादा स्पष्ट था, जो संयुक्त राष्ट्र नरसंहार सम्मेलन की परिभाषा को पूरा करता था, और इसे एक पीड़ित मानसिकता द्वारा उचित ठहराया गया था जो यहूदियों को जर्मनी के अस्तित्व के लिए एक अस्तित्वगत खतरे के रूप में प्रस्तुत करता था, जिसने जनसंख्या को किए गए अत्याचारों के प्रति असंवेदनशील बना दिया।

इज़राइल (2023-2025): 7 अक्टूबर, 2023 के हमले के बाद इज़राइल के फलस्तीनियों के खिलाफ कार्यों ने नरसंहार में परिणति की, जैसा कि मई 2025 के नरसंहार अध्ययन NRC लेख द्वारा पुष्टि की गई, जिसमें शोधकर्ता सर्वसम्मति से इज़राइल के गाजा में कार्यों को "नरसंहार" के रूप में वर्गीकृत करते हैं, और दिसंबर 2024 के एमनेस्टी इंटरनेशनल रिपोर्ट द्वारा साक्ष्य में शामिल हैं:

- **व्यवस्थित हिंसा और अभाव:** दिसंबर 2024 का रिपोर्ट अस्पतालों जैसे नागरिक बुनियादी ढांचे पर हमलों और भुखमरी की स्थिति लागू करने को दस्तावेज करता है, साथ ही नवंबर 2024 तक 44,000 से अधिक फलस्तीनियों की मौत और 19 लाख विस्थापित लोगों की संख्या, UNRWA के अनुसार।
- **इरादा:** इन कार्यों की व्यवस्थित प्रकृति, जिसका उद्देश्य गाजा को रहने योग्य नहीं बनाना है, संयुक्त राष्ट्र नरसंहार सम्मेलन के मानदंडों—हत्या, गंभीर नुकसान पहुंचाना, और शारीरिक विनाश लाने वाली परिस्थितियों को लागू करना—के साथ संरेखित है।

विकिपीडिया लेख में उल्लिखित इज़राइल की पीड़ित मानसिकता इस नरसंहार को नैतिक अभिजात्य (इज़राइल को नैतिक रूप से श्रेष्ठ देखना), सहानुभूति की कमी (फलस्तीनी पीड़ा को नजरअंदाज करना), और चिंतन (इज़राइल के आघात पर ध्यान केंद्रित करना) जैसे लक्षणों के माध्यम से सक्षम बनाती है, जो फलस्तीनियों के व्यवस्थित विनाश को एक कथित खतरे के खिलाफ "रक्षात्मक" कार्य के रूप में उचित ठहराती है।

समानता: दोनों राष्ट्रों ने अपनी प्रक्षेपवक्र को पीड़ित मानसिकता से प्रेरित होकर नरसंहार में समाप्त किया। जर्मनी का होलोकॉस्ट और इज़राइल का गाजा में नरसंहार में राज्य-प्रेरित हिंसा शामिल है, जो अल्पसंख्यक के विनाश को लक्षित करती है, व्यवस्थित तरीकों (हत्या, अभाव) का उपयोग करती है और समूह को खत्म करने का स्पष्ट इरादा प्रदर्शित करती है। स्केल भिन्न है—60 लाख यहूदी बनाम 44,000 से अधिक फलस्तीनी—लेकिन इरादा और तंत्र आश्चर्यजनक रूप से समान हैं।

V. नीत्शे की चेतावनियाँ: पीड़ित मानसिकता के माध्यम से परिवर्तन

नीत्शे के उद्धरण—“जो राक्षसों से लड़ता है, उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह इस प्रक्रिया में राक्षस न बन जाए” और “यदि आप गहरे गड्ढे में झाँकते हैं, तो गहरे गड्ढे भी आप में झाँकते हैं”—एक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं ताकि यह समझा जा सके कि पीड़ित मानसिकता ने दोनों राष्ट्रों को नरसंहार के अपराधी में कैसे बदल दिया।

राक्षसों से लड़ना

- **द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी:** जर्मनी ने यहूदियों को अपने अस्तित्व के लिए “राक्षस” के रूप में प्रस्तुत किया, इस कथा का उपयोग उनकी बहिष्कार और अंततः उन्मूलन को उचित ठहराने के लिए किया। इस कथित बुराई से लड़ते हुए, जर्मनी राक्षसी बन गया, प्रचार के माध्यम से यहूदियों का अमानवीकरण किया और होलोकॉस्ट के दौरान नरसंहार किया।

- **इज़राइल:** इज़राइल फलस्तीनियों को “राक्षस” के रूप में प्रस्तुत करता है, अक्सर उनकी तुलना ऐतिहासिक उत्पीड़कों से करता है, अपने कार्यों को उचित ठहराने के लिए। हालांकि, ऐसा करने में, यह राक्षसी रणनीतियों को अपनाता है—वेस्ट बैंक में बच्चों की हत्या, गाजा में नागरिक बुनियादी ढांचे पर हमले, और 2024 के मानवाधिकार रिपोर्ट और 2025 के NRC लेख द्वारा सिद्ध नरसंहार। नैतिक अभिजात्य के साथ पीड़ित मानसिकता इन कृत्यों को अस्तित्व के लिए आवश्यक के रूप में बहाना बनाती है, जो जर्मनी के औचित्य को दर्शाती है।

गहरे गढ़ में झाँकना

- **द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी:** जर्मनी का प्रथम विश्व युद्ध के बाद की शिकायतों पर अटल रहना—राष्ट्रीय अपमान का “गहरे गढ़”—ने इसे उस अंधेरे को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रेरित किया, होलोकॉस्ट के साथ नैतिक भ्रष्टाचार में उतरते हुए, वह बुराई बन गया जिसका उसने विरोध करने का दावा किया था।
- **इज़राइल:** इज़राइल का होलोकॉस्ट आघात के प्रति जुनून—ऐतिहासिक पीड़ा का “गहरे गढ़”—इसके कार्यों में प्रतिबिंबित होता है, क्योंकि यह गाजा में नरसंहार करता है, उन अत्याचारों को प्रतिबिंबित करता है जिन्हें रोकने की वह कसम खाता है। विकिपीडिया लेख की सहानुभूति की कमी और चिंतन की विशेषताएँ इस पतन को और बढ़ाती हैं, क्योंकि इज़राइल अपनी पीड़ा पर ध्यान केंद्रित करता है जबकि फलस्तीनी पीड़ा को नजरअंदाज करता है।

समानता: नीतशे की चेतावनियाँ दोनों राष्ट्रों में पीड़ित मानसिकता की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करती हैं। एक कथित दुश्मन से लड़ते हुए, वे नरसंहार के अपराधी बन गए; अपने-अपने आघात के गहरे गढ़ों में झाँकते हुए, उन्होंने उस अंधेरे को प्रतिबिंबित किया, अपने ऐतिहासिक उत्पीड़कों की रणनीतियों को अपनाते हुए।

VI. व्यापक प्रभाव और नैतिक चिंताएँ

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी और 17 मई, 2025 तक इज़राइल के बीच समानताएँ एक खतरनाक पैटर्न को उजागर करती हैं: जब पीड़ित मानसिकता को हथियार बनाया जाता है, तो यह अल्पसंख्यक समूह के व्यवस्थित विनाश की ओर ले जा सकता है। जर्मनी की प्रक्षेपवक्र—1920 के दशक की शुरुआत से होलोकॉस्ट तक—दर्शाती है कि प्रचार, बलि का बकरा बनाना, और अमानवीकरण कैसे नरसंहार में समाप्त होता है। इज़राइल की प्रक्षेपवक्र—1948 में इसकी स्थापना से गाजा में नरसंहार तक—समान पथ का अनुसरण करती है, पीड़ित मानसिकता उसी तंत्र को सक्षम बनाती है, जैसा कि सार्वजनिक नारों, सैन्य हिंसा, और व्यवस्थित विनाश के साक्ष्य में देखा जाता है।

नैतिक चिंताएँ:

- **नैतिक विडंबना:** नरसंहार से शरणस्थल के रूप में स्थापित इज़राइल, फलस्तीनियों के खिलाफ नाज़ी जर्मनी की याद दिलाने वाली रणनीतियों को दोहराता है, जो इसके “फिर कभी नहीं” के मूल सिद्धांत का खंडन करता है। सहानुभूति की कमी और नैतिक अभिजात्य इज़राइल को इस विडंबना से अंधा कर देते हैं, क्योंकि यह फलस्तीनी मानवता पर अपनी पीड़ित स्थिति को प्राथमिकता देता है।
- **अंतरराष्ट्रीय मिलीभगत:** 1945 तक होलोकॉस्ट को रोकने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की विफलता, 2025 के NRC लेख में उल्लिखित इज़राइल के नरसंहार के लिए अपर्याप्त प्रतिक्रिया में प्रतिबिंबित होती है, जो 2024 के ICJ मामले जैसे कानूनी कार्यवाइयों के बावजूद अत्याचारों को जारी रखने की अनुमति देती है।
- **आघात का चक्र:** इज़राइल के कार्य आघात के चक्र को बनाए रखते हैं, क्योंकि फलस्तीनी पीड़ा नाज़ियों के तहत यहूदी पीड़ा को प्रतिबिंबित करती है, जो संभावित रूप से भविष्य के संघर्षों और नाराजगी को बढ़ावा देती है। 7 अक्टूबर, 2023 के हमले के आसपास की प्रारंभिक कथा, जो कुछ हताहतों में इज़राइल की भूमिका के बावजूद फलस्तीनियों को बलि का बकरा बनाती है, इस चक्र को और बढ़ाती है।

निष्कर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जर्मनी और 17 मई, 2025 तक इज़राइल के बीच समानताएँ गहरी और अत्यधिक परेशान करने वाली हैं। दोनों राष्ट्र, पीड़ित मानसिकता से प्रेरित—जर्मनी प्रथम विश्व युद्ध के बाद, इज़राइल होलोकॉस्ट के बाद—ने अल्पसंख्यक (यहूदी, फलस्तीनी) को सामाजिक समस्याओं के लिए बलि का बकरा बनाया, उनका अमानवीकरण किया, हिंसा भड़काई, और अंततः नरसंहार किया। जर्मनी का होलोकॉस्ट और इज़राइल का गाजा में नरसंहार, जैसा कि सार्वजनिक बयानबाजी, सैन्य कार्यों, मानवाधिकार रिपोर्टों, और शैक्षणिक सहमति द्वारा सिद्ध है, उसी तंत्र को दर्शाता है: राज्य-प्रेरित हिंसा, व्यवस्थित तरीके, और उन्मूलन का इरादा, जो जिम्मेदारी स्वीकार करने से इनकार और लक्षित समूह के लिए सहानुभूति की कमी द्वारा उचित ठहराया गया है। नीत्शे की चेतावनियाँ इस परिवर्तन को रोशन करती हैं, क्योंकि दोनों राष्ट्र वह “राक्षस” बन गए जिनसे वे लड़े और अपने कार्यों में अपने आघात के “गहरे गड्ढे” को प्रतिबिंबित किया। यह विश्लेषण पीड़ित मानसिकता के हिंसा के चक्र को बनाए रखने के खतरों को रेखांकित करता है, ऐतिहासिक आघात के बारे में महत्वपूर्ण चिंतन का आग्रह करता है कि यदि सहानुभूति और जिम्मेदारी के साथ संबोधित नहीं किया गया तो यह नए अत्याचारों को जन्म दे सकता है।